क्या आप जानते है ?

1. ब्रह्माण्ड क्या होता है ?
2. देवता किस रुप में किस लोक में कहाँ–कहाँ उपस्थित है ?
3. आत्मा क्या होती है ?
4. शरीर क्या होता है ?
5. शिवलिंग की पूजा क्यों की जाती है ?

तर्कों/तर्क शास्त्रियों व कुतर्कों का स्थान नहीं है
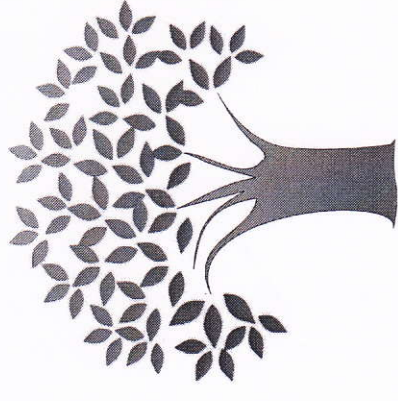
: प्रकाशक , मुद्रक, वितरक :

बार्चे इंटरप्राइजेस

न्याय क्षेत्र खरगोन

अतल रसातल से पूर्ण ब्रह्म लोक तक

मानकर रहती है, जब तक मानव नहीं चाहेगा, पूर्ण मोक्ष प्राप्त नहीं होगा। दुनिया में लोगों ने नियम बना रखे है , धर्म तो परहित ही है। आत्मा का शरीर से कोई मतलब नहीं है शरीर पहले से बनता है , आत्मा का संचार तो जन्म होने के बाद आता है। इसलिए भारत भूमि में बच्चे के जन्म के छठे दिन बाद छठ पूजा होती है , जो सही है।

तार–तार होना : मंत्रोच्चार से स्वः लोक से ही शरीर की नाड़ियाँ अलग अलग स्पंदन करती है, जैसे वीणा के स्वर अलग–अलग बज रहे हो।

त्रिकुटी मध्य : दो आंखों के मध्य का स्थान किन्तु तीन नाड़ियाँ और तीसरी आँख खुलने का स्थान है।

कवच : शरीर मे मस्तिष्क के पिछले हिस्से में प्रत्येक लोकों में अलग–अलग कवच बनते है, इनसे ऐसा लगता है कि शरीर के प्रत्येक भाग अलग–अलग हो। यही कवच है।

मोक्ष : आत्मा का परमात्मा में विलय होना ही मोक्ष है।

सुरती : सुरती का अर्थ होता है श्वांस अंदर ले जाना।

निरती : निरती का अर्थ होता है श्वांस बाहर ले जाना।

स्पष्टीकरण :

स्पष्ट हो जाता है कि क्रिश्चन धर्मावलंबी क्रिसमस ट्री बनाकर उसकी पूजा करते है।अर्थात क्रिश्च न धर्मावलंबी परम अक्षर ब्रह्म लोक तक पहुंचकर उस प्रकाश को पूजते हे। मिस्र निवासी पिरामिड अर्थात् क्षर ब्रह्म के अंतिम लोक तक पहुंचे है। इस्लाम धर्मावलंबी परम अक्षर ब्रह्म लोक तक पहुंचे है जिसका प्रमाण मक्का में पवित्र वर्गाकार आकृति प्रमाण है तथा कबीर पंथी भी परम अक्षर ब्रह्म लोक तक पहुंचे है। किन्तु भारत के सनातन पद्धति से संपूर्ण लोकों की यात्रा हुई है। जो शिवलिंग युक्त आकाश तथा पूर्ण ब्रह्म लोक में पहुंचे है , जिसका उन्होने पूर्व में पत्थरों पर उत्कीर्ण कर धरोहरें संजोकर रखी है एवं मंदिरों में पूजा होती है।

कथन

परम संत श्री श्री 1008 श्री जानकीदासजी महाराज हरिद्वार के द्वारा प्रदत्त मंत्रों से बीजारोपित व प्रस्फुटित तरंगों के वेग से बहती ज्ञान गंगा से आलोकित असहाय जर्जर शरीर हो इसके पूर्व ही परम सत्य को प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। देवताओं के देवता का दास का पारासर गोत्र में 23.05.63 में जन्म हुआ व लोकों को पदों को क्रमबद्ध जो जिस उँचाई पर हो दिखा लिपिबद्ध किया।

प्रवीण कुमार बार्चे
निवासी–बलकवाड़ा
तहसील कसरावद, जिला प.नि. खरगोन
मो.नं. 7697169794

परम आदरणीय
माताजी ग.भा. कलावती व
पिता स्व. श्री राजनाथ जी
को सादर समर्पित

नार – पानी , यण – आना

पानी पर खिले कमल पुष्प पर अपने भार को हल्का करके छोटा करके बालक स्वरुप में आते है नारायण। क्योंकि यहॉ विनम्र भाव होता है, इसलिए आप कवि है। शेष नाग इत्यादि पद स्वरुप व्यक्ति है। नारायण नहीं।

आत्मा क्रमशः तीन बार डाली जाती है। प्रथम बार में बच्चे के जन्म के पश्चात (छठी पूजते है) दूसरी बार में अक्षर ब्रह्म लोक में हीरे जैसी। तृतीय बार में कवड़ी जैसी। यह दास के (मेरे द्वारा) प्रत्यक्ष रुप से घटित हुआ, जब पूर्ण मोक्ष में विलिन प्रथम आत्मा के बाद हीरे जैसे प्रकाश सदृश अंत में कवड़ी जैसे प्रकाश सदृश डाले गये। इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि प्राण, आत्मा और तार–तार होना तीनों में भिन्नता है।

प्राणः

वायु एवं रक्त का स्पंदन ही प्राण है। इनका स्पंदन खत्म होते ही मृत्यु प्राप्त होती है।

सुख : चार दोस्त बैठे थे, गप्पे लगा रहे थे, कुतर्कों से खुश हो रहे थे, कुछ काम आने से इनमें से एक उठके चला गया। शेष तीन रह गए अब वे उसकी बुराई करने लगे। उनमें से फिर एक उठके चला गया। अब बचे दो वे अभी गए उस दोस्त की बुराई करने लगे। उनमें से उठके गया पहला दोस्त वापस आ गया। इस बीच वे दो बैठे दोस्तों में से एक और उठके चला गया , वे दोनों दोस्त उस चले गये दोस्त की बुराई करने लगे। इस बीच वह दूसरा उठके चला गया दोस्त वापिस आ गया किसी काम से गए दोस्त वापिस आ गए शेष रहा दोस्त भी उठके चला गया, अब ये तीनों उसकी बुराई में समय बर्बाद करने लगे।

आत्माः

आत्मा ही कारण शरीर है जो मोक्ष चाहने वालों को या जो पूर्ण ब्रह्म के प्रकाश में विलिन होने वाले को उनका मन जहाँ चाहे वहां ले जा सकती है। आपके शरीर को घर

आभार :

दिए गए दर्शनों के लिए।

आशा :

आने वाले दिन अच्छे हो।

सिद्धियाँ :

स्व लोक व तपलोक में सिद्धियाँ एक जैसी ही होती है, किसी व्यक्ति को देख लेना वह क्या कर रहा है। यह सब गोल घेरे में गेंद के सदृश्य होती है। अक्षर लोक में यही सिद्धियाँ बड़े रुप में होती है। किसी भी परिचित को बैठे देखना वह क्या कर रहा है। पर आवाज नहीं आती तथा इतना भी नहीं ज्ञात होता है कि वह कहां बैठा है। सिद्धियाँ बहुत प्रकार की होती है।

यह कहना मुर्खता होगी की उससे संपर्क हो गया, वह तो मिलन व विरह है। उसके विरह का दुःख सब दुःखों से बड़ा दुःख है।

यह कहना भी मूर्ख लोगों का काम है कि वह (मैं) सन्यास ले लूं व भगवे कपड़े पहन लूं। अरबों लोगों में एक व्यक्ति ही ऐसा होगा/यह भारतीय जीवन पद्धतियाँ है।

ब्रह्मा (।) आ की मात्रा लगी हो, विष्णु शिव तीनों माँ दुर्गा के पुत्र है। तथा भुव, स्वः व मह लोक मैं आप पदस्थ है। गणेशजी आप भू लोक में पदस्थ है तथा मह लोक में श्वेत वस्त्रों में आती हुई औरत के द्वारा ही प्रतिष्ठापित है इसलिए आप उसी के पुत्र है।

परम अक्षर ब्रह्म परोक्ष रुप में गुरु रुप में दिखते है

त्रिकाल दर्शी :

त्रिकाल दर्शी संत का मतलब यह है कि परम अक्षर ब्रह्म लोक, अक्षर ब्रह्म लोक व क्षर ब्रह्म लोकों के दर्शन होना।

: लोक :

अतल/रसातल:

पृथ्वी के नीचे का प्रथम लोक जैसे हजारों फीट की गहराई लिए व गोलाई लिए है, यह असाधारण रुप से गहरी काली जैसे ईट जुड़ी रहती है। इस प्रकार प्रतीत होता है। यहाँ जाया जा सकता है। ऐसा लगता है जैसे – चमकीले चाँदी जैसे द्रव्य बूंदो के रुप में चमक रहा हो। यहाँ पर माँ **पार्वती** अष्ट भुजा व शेर पर सवार कर विशेष प्रकार के अष्टचक्र युक्त स्वर्णचक्र पर विराजमान दिखी। आप शुद्ध भारतीय वेशभूषा में अष्टभुजी रुप में है। (देखे पृ.क्र.5)**स्पष्टीकरण:** अगर आप दुर्गा होती तो आपका प्रकाश सिंदूरी होता, जो आपके शरीर से निकल रहा होता, किंतु यहाँ पर ऐसी स्थिति नहीं देखी गई, इसलिए आप पार्वती है।

भू लोक /पाताल लोक:

भू लोक में रीढ़ के हड्डी के सबसे निचले स्तर पर ध्यान योग से हल्का काला धुंआ उठते हुए दिखता है। यहाँ गठान खुलती है एवं हल्की ध्वनि होती है। यह लोक दो भागों में विभक्त है तथा प्रथम भाग में गणेश जी का दिव्य व विशाल दरबार जैसे विशाल मैदान हो। अज्ञात शक्ति से दरवाजा खुलता है, दरवाजा खुलते ही गणेशजी जहाँ विद्यमान है, यहाँ हजारों संतों का अंदर प्रवेश होता है। ये सभी साधु संत भारतीय वेशभूषा भगवा वस्त्र में जैसे कपड़े पहनते हैं वैसे ही लगते है। ये गणेशजी के दर्शनों हेतु यहाँ आते है। स्पष्ट है कि ये वहाँ नित्य रहते है। इसके दूसरे भाग में विशाल खाई है इसे पार करते हुए जाना पड़ता है तथा यहाँ पर बड़े व चपटे मस्तिष्क वाले अर्द्ध नग्न बड़े काले लोग व अर्द्ध नग्न नारियाँ रहती है। यहाँ श्वेत प्रकाश से लोक प्रकाशित है। यहाँ पर पत्थरों से निर्मित तीन तरफ खुले हुए मंदिर है।

स्पष्टीकरण : यहाँ साधारण मानव रहते है, इसलिए इस लोक को पाताल लोक नाम मेरे द्वारा दिया गया है। गणेशजी का मुखमंडल श्वेत हाथी के मुखमंडल जैसा है। इससे स्पष्ट है कि पहले या अन्य ब्रह्मांड के किसी स्थल पर श्वेत हाथी रहतें होंगे। उनकी सुंड में दो–दो इंच पर दोनों तरफ बारीक रक्त लकीरें है।

पांच जन्य शंखलोक : वहाँ विशाल अर्द्ध खिला कमल का फूल हो, ऐसा ताम्र वर्ण की तरह शंख सजा है एवं इर्द गिर्द जैसे किसी ने स्वर्ण डडियाँ लगाई हो व उन डंडियों के ऊपर स्वर्ण प्रकाशयुक्त छोटे बल्ब 8 से 10 इंच के फासले पर लगाये हो। यह

प्रकाश वहाँ के आसमान को छू रहा है। डंडियाँ ऐसे लगती है जैसे स्वर्ण जैसा पतला धागा बांधा हो।
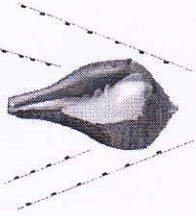
भुवः लोक :

यह रूद्र का वास स्थान है। यहाँ सूर्य अर्द्ध प्रकाशित दिखता है। यह सूर्य जैसे अग्नि की अर्द्ध थाली हो, में कोई दहकते अंगारे रख दिये हो ऐसा प्रतीत होता है। पर रूद्र के दर्शन हुए। किंतु यह रूद्र वास्तव में भारत भूमि में बार-बार प्रकट होते है, इसी को शिव कहा गया है। यही सौराष्ट्र, श्रीशैल, महाकाल, ममलेश्वर, बैजनाथ, भीमाशंकर, रामेश्वरम, नागेश, विश्वेष, त्र्यम्बकं, केदार, घृष्णेशं इत्यादि नामों से परिचित भारत भूमि में हुए है। आप ही रावण को वर देते है तथा भुवः पृथ्वी लोक व अन्य ब्रह्मांड के मालिक है। आप आज भी भारत भूमि पर विद्यमान है तथा प्रत्येक व्यक्ति को नाम से जानते है। आप ही वर दाता है। आप ईशान (उत्तर) से आते है। आपके आदेश चलते है। आप जब आते है तब स्पष्ट संकेत प्राप्त हो जाते है व आवाज भी आती है, कि कोई आ रहा है। आपको पता है कि भक्त यहाँ क्या चाह रहा है, किंतु आप चले जाते है। तब भक्त सब कुछ खो देता है, क्योंकि भक्त ठगा सा रहता है। आपके यहाँ सशरीर आत्माएँ नित्य खड़ी रहती है व आप उन्हें मोक्ष प्रदान कर रहे है। आप कृपालु है आपकी आंखों से अश्रु धाराएँ भक्त के लिए होती है। यह स्थिति दास ने वहाँ जाकर स्पष्ट देखी है व मिला है। आप ईशान या उत्तर से आते है तथा आप ही शिव या ब्रह्मा है। आप ही वरदान देते है। तीसरी बार आपको मैंने श्वेत नंदीश्वर जो नीचे बैठे हुए है तथा नंदीश्वर का मुंह पश्चिम में है तथा आप उत्तर तरफ मुंह कर खड़े है। स्पष्ट देखा है। आप इशान है। आप चारों वर्णों में अवतरित होते है। यह प्रकाश मस्तिष्क में सघन रुप से प्रस्फुटित होते है। प्रथम काला श्वेत पीला और नीला यही चार प्रकाश द्वितीय बार प्राप्त आत्मा के जलने से होते है। रुद्र चार रुपों में या जातियों में या समुदायों में प्रकट होते है। यही मानव समुदायों में प्रकट होते है।

स्पष्टीकरणः इससे स्पष्ट होता है कि आप परम अक्षर ब्रह्म या पूर्ण ब्रह्म के प्रतिनिधि है एवं आप ही एकमात्र है जो वरदान देते है। आपके अतिरिक्त क्षर या अक्षर ब्रह्म वरदान नहीं देते। यहाँ अर्द्ध सूर्य प्रकाशित दिखता है यह सूर्य पूर्ण उंचाई से दिखता है (अक्षर ब्रह्म लोक से)। चूंकि यहाँ से नीचे देखने पर कई सुरंगे है इसलिए यह अर्द्ध सूर्य दिखता है। वास्तव में यह आपका अपना ही सूर्य है।शरीर के अंदर बनने वाला अर्द्ध सूर्य

प्रेरणा : गुरु करें व प्रेरणा लेवे।

प्रयास :

ईश्वर प्राप्ति से लेकर मोक्ष तक के।

प्रेरक :

मोक्ष प्राप्त हो गया तो प्रेरक बने।

क्षर ब्रह्म : क्षर ब्रह्म छाया रुप में गुरु रुप में दिखते है।

आडंबर :

आडंबर (पाखंड) नहीं फैलावें ।

प्रतिघातः

प्रतिघात नहीं करें।

प्रतिशोध :

प्रतिशोध नहीं लेवे।

कृतज्ञ :

कृतज्ञ रहे लोगों द्वारा किए गए उपकारों के प्रति।

अभिमान :

पूज्यता के अभिमान का अभाव हो अर्थात पूर्वाग्रही नहीं बने, अलंकारों उपमाओं से रहित हो जीवन।

आनंद : आनंद पैदा करो।

अंत में

अनुनय विनय :

श्रद्धा : श्रद्धा सजल हो रही है।

विश्वास : अटल हो रहा है।

निश्चय : निश्चय दृढ़ हो रहा है।

इच्छा शक्ति : इच्छा शक्ति ही बीज है।

हरि कृपा : परिस्थितियां अनुकूल हो रही है, तो समझो हरिकृपा।

हरि इच्छा : परिस्थितियों प्रतिकूल हो रही है, तो समझो हरि इच्छा।

पुरुषार्थ :

भाग्य भरोसे न रहकर पराक्रम व साहस से आगे बढ़ो।

प्रतीक्षा :

परिस्थितियों को बदलने में देर नहीं लगेगी, निश्चय करो व समय का इंतजार करो।

न्याय :

ईश्वर सर्वत्र न्यायकारी है, उसके न्याय में देर है, अंधेर नहीं है।

अपराध :

किए गए अपराधों का प्रायश्चित करो।

सेवा :

परहित का ध्यान रखो।

समर्पण :

सब कुछ ईश्वर का है।

आत्मश्लाघा : अपनी बढ़ाई नहीं करो।

आंख : जो देख रहा है।

दृष्टि :

जो जान रहा हूं।

वास्तव में पृथ्वी के सूर्य का प्रतीक है।

अंतरिक्ष यान : बड़े मटके के आकार के लगभग सात फीट उंचाई एवं चौड़ाई वाले पीतल के यान मेरे द्वारा उड़ते देखे गये। इससे स्पष्ट है कि पृथ्वी के अलावा भी अन्य लोकों पर जीवन है। मानव है। जो पृथ्वी से ज्यादा समुन्नत है।

स्व लोक :

प्रथमतः इस लोक में पांच कोष स्थापित है। जिनमें अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञान मय कोष व आनंद मय कोष। द्वितीय में अनादि ब्रह्म (स्वलोक के दक्षिण में) जिनके नेत्र हाथ, कान, मस्तिष्क पैर नही है तथा फिर भी ये चल सकते है। आप लगभग 4 फीट बाय 4 फीट चौकोर व 6 से 6 1/2 फीट उंचाई के श्वेत प्रकाश स्वरुप है। आप दक्षिण से आते है। तृतीय में पितृलोक (स्वलोक के उ त्तर में) जहां आत्माएँ प्रकाश स्वरुप में उठती है। ऊपर हल्का भार तथा गोलाई (वृत्ताकार) लिए दो भागों में विभक्त है। वृत्ताकार भाग भी दो भागों में विभक्त है प्रथम भाग बाहर हल्का सुनहरा रंग लिए है तथा दूसरा वृत्ताकार भाग (अंदर का) काले रंग से निर्मित है। नीचे के भाग सघन व रस्सी की तरह लटका है। यह सभी चार से 6 इंच में पूर्ण है तथा यही कारण शरीर ही है। यही से आत्माएं सूक्ष्म शरीर में बदलकर या तो अस्थायी मोक्ष प्राप्त करती है या स्वर्गलोक जाती है या पृथ्वी पर भूत प्रेत पिशाच योनियों में निरंतर घूमती रहती है। तुलसीदासजी भी लिखते है शंकर सहस विष्णु अज तोही , सकई ना राखी राम कर द्रोही। इससे स्पष्ट होता है कि यह आत्माएं शंकर, विष्णु, ब्रह्मा पद रुप में भी घूमती रहती है। जो अलग-अलग स्थानों पर पढ़िये इसी पुस्तक में परिवर्तित होते रहते है। इस लोक में सभी सर्प के अलग अलग हैं तथा जैसे तेज हवा चलती है व वृक्ष हिलते है ऐसे वें क्रोधित हो बार बार फण मारते रहते है एवं इनका रंग गुलाबी रंग की तरह है तथा इस लोक में रक्त वर्ण लिए छोटा सूर्य चमकता है। यह ग्रह छोटा है। इस सूर्य के प्रकाश से इन सर्पों की खुबसूरती बढ़ती है। विष्णु का मतलब विषंभर भी होता है अर्थात विष भरे सर्प भी नाम दिया गया है। विष्णुजी अपना भोग शरीर के अंदर से प्राप्त करते है। किंतु शिव बाहर से शुद्ध होते है (देखे पृष्ठ क्र. 10 शिवलोक)

महलों का लोक : महलों का लोक दो भागों में विभक्त है। प्रथम भाग स्वर्ग है जो उत्तर या बाये हाथ तरफ यहाँ सफेद ज्योति जलती रहती है , हृदय में जलती हुई ज्योति इस ज्योति का प्रतीक मात्र है। जिससे वहाँ प्रकाश होता रहता है। दूसरा भाग इसी प्रथम भाग से होकर गुजरना पड़ता है। यही भाग नर्क लोक है। किंतु यहाँ एक सुरंग है, जो गहरी नहीं है। इसी सुरंग से अंदर जाना होता है। यहाँ एक व्यक्ति है जो अत्यंत साधारण है व श्वेत कपड़े कमीज पायजामा जैसे पहने है। आप या तो

अत्यंत शांत है या अत्यंत क्रोधित है। आप साक्षात शंकर जी है। यहाँ एक श्वेत वस्त्र पहने जैसी महिला अत्यंत सुंदर उंची एवं मोटी है। यहाँ आती है यहाँ बहुत सारे छोटी काले रंग की पहाड़ियाँ पूर्ण पत्थर से निर्मित है व इन्ही पहाड़ियों के अंदर बहुत सारे मकान लंबे चौड़े बने हुए है। जैसे पुराने जमाने के भारत के बैरुल की गुफाएँ इत्यादि है (अजंता एलोरा की) इन्ही मकानों में व्यक्ति सशरीर कैद है।

ये सशरीर बदले की भावना से कैद रहते है जब समय आता है तब यह बाहर निकलते है व अपना बदला लेते है। इनके शरीर काले है। मैं जब पहली बार गया तो इसी व्यक्ति के द्वारा इशारे से बताया गया और मैं इन पहाड़ियों में बने मकानों के पास गया यहाँ अंधेरा है, किंतु आत्मा जैसे आगे आगे प्रकाश उत्पन्न करती चलती है। यह श्वेत प्रकाश है, यहाँ पर यह व्यक्ति जहाँ बैठे थे। वहाँ वापिस आया तब नहीं था, किंतु यहाँ जले हुए मांस की बदबू आती थी। दूसरी बार अज्ञात शक्ति से मैं पुनः इसी व्यक्ति के पास खड़ा था। आप एक टीले या उसी पहाड़ी पर बैठे थे व बहुत क्रोधित हो, मुझे इशारे से कुछ कह रहे थे। आपके हाथ में कोई तगारीनुमा बर्तन था। आपने क्रोधपूर्वक वह बर्तन पहाड़ी पर फेंका। उसका तरल द्रव्य बहने लगा व उसकी बदबू से मेरा शरीर भर गया। यह बदबू 15 दिनों तक आई। किसी के लिए यह कहानी लगे, किंतु सही स्थिति लिख दी।

पहली बार जब मैं गया तो कोई व्यक्ति साथ था। हम सुरंग के मुहाने पर खड़े थे तथा वह औरत आई। वह श्वेत रंग के कपड़े पहने हुई थी जैसे यहाँ बोहरे समाज की औरतें कपड़े पहनती है, (यही औरत पहले सती, पार्वती एवं बाद में मत्स्या कहलाई जो मछलियों जैसे कपड़े पहनने के कारण नाम रखा गया। इसका विस्तृत वर्णन शिवपुराण में मिलता है) इस प्रकार से। यहाँ पर शिवजी बाई ओर (देखे भारत में गंगा प्रवाह हो रही शिवजी की फोटो) तपस्यारत दिखते है तथा दाहिनी ओर विष्णु शयनरत है। इस प्रकार से दिखता है, किंतु यह वास्तव में है नहीं। यही स्वर्ग है यहाँ पर ज्वाला उठती है, जो श्वेत रंग है एवं विशाल है। इसी से यहाँ पर स्वर्ग लोक में प्रकाश होता है। महलों के लोक में जहाँ नरक है, जिनका विवरण किया गया है, यहाँ आत्मा से प्रकाश होता है।

संयम :
जीवन शक्तियों की बरबादी को रोकने का नाम संयम है। कहने का तात्पर्य यह है कि अकारण अधोगति को जाने वाली ऊर्जा के क्षरण को रोकना है।

शम : मन को शांत करना, मन को नम्र करना, मन आत्मा की शरण में है। मन नम हो रहा है। मन महामना हो रहा है। मन सिमरन कर रहा है।

दमः
इंद्रियों का दमन का नाम है।

तितिक्षा : सहनशीलता।

उपरति : भोगों का त्याग।

प्रेम :

देना ही देना है। सौदों तथा शोषण से दूर रहे।

हृदय :

हृदय करुणा से ओतप्रोत हो रहा है। हृदय निष्पाप हो रहा है। हृदय प्रेम से आल्हादित हो रहा है। हृदय तप से कुंदन हो रहा है। हृदय उदार हो रहा है।

वाणी : वाणी नम्र हो रही है। सत्य वचनों का प्रतिपादन कर रही है। वाणी शुद्ध हो रही है।

स्वाद के नाम पर अधिक भोजन ग्रहण नहीं कर रहा हूं।

बुद्धि : बुद्धि श्री चरणों में स्थिर हो रही है।

अहंकारः अहंकार ओंकार में बदल रहा है।

तार–तार होना :

शरीर की प्रत्येक नसें प्रभु के नाम का उच्चारण कर रही है।

मोक्ष : आत्मा का उसी परम प्रकाश में स्वर्ण प्रकाश में स्वर्ण लहरों में मिलना रोमावली पुलकित हो रही है।

मन से हमारा संपूर्ण शरीर नंदन वन बन जाए। मन विनम्र हो जाए मन नम दो जाए मन नारायण बन जाए। मन पवित्र हो जाए। मन आत्मा में रमण कर रहा है।

विज्ञान मय कोष :

मैं शरीर नहीं हूं। मैं आत्मा हूं। विज्ञान का अर्थ सब कुछ प्राप्त कर लेना होता है। यहाँ सिद्धियाँ प्राप्त की जा सकती है।

आनंद :

आनंद मय रहने से व्यक्ति उल्लास बिखरा हुआ लगता है। यह अस्थाई है। इस कोष के स्थापन होने से धूप नहीं लगती एवं पांव में भी तपन नहीं लगती है।

महत्वपूर्ण :

ब्रह्मचर्य :

इसका अर्थ ब्रह्म में रमण करना होता है। न की कुंवारापन या काम के दमन का भुवः लोक की स्थिति स्वाधिष्ठान चक्र में रहती है। अर्थात स्व का अर्थ अपना व अधिष्ठान का मतलब रहने का स्थान। यहाँ ब्रह्मा का वास स्थान है। आहार शुद्ध तो सत्व अर्थात रक्त प्राण मज्जा, वायु, वायुवाहिनीयां, आहार वाहिनी या शब्द सभी शुद्ध हो।

अनुभूतियाँ :

अनुभूतियाँ क्या होती है।

अनु का मतलब छोटा उसको जान लेना व भूति हो रहा है अर्थात छोटे से विशाल को जान लिया।

प्रसन्नता :

शरीर के अंदर से प्राप्त होती है। प्रतिष्ठा बाहर से आती है। इस प्रतिष्ठा से अहंकार उत्पन्न होता है। जो दोस्तों में व्यक्ति को बांट देता है। इससे व्यक्ति मंदांध होता है। व्यक्ति/जिससे धन का अपव्यय होता है।

अनहद नाद यही क्षेत्र में गुंजता है तथा इसी क्षेत्र में दो अन्य हाथ है, जो गुप्त रुप से रहते है व ध्यान करने से खुलते है तथा इसी क्षेत्र में नीला प्रकाश धीरे-धीरे उठता है। जैसे चार कांच के गिलास लो व उनमें नीला पानी भरो एक में एक इंच दूसरे में 3 इंच तीसरे में आधा व चौथा पूरा भरा हो। इसी प्रकार यह प्रकाश उठता है।

दूसरा प्रकाश जैसे तांबे के समान उर्द्धाकार उठता है। इस प्रकाश में ताप नहीं होता ये गर्म नहीं है। ध्यान मुद्रा में तपस्यारत शिवजी शिवलोक (अर्थात महलों का लोक) का प्रतीक है तथा शयनरत विष्णु विष्णुलोक का प्रतीक है। शिवलोक उत्तर का एवं विष्णु लोक दक्षिण का प्रतीक है, जो विष्णुलोक अथवा स्वर्ग है। यही विष्णु पद रुप है। यह स्त्री जहां जाती है वहीं पर काले पत्थरों से निर्मित विशाल घंटा लगा हुआ है। जो भारत के मंदिरों में पित्तल के पाये जाते है,उसी प्रकार से यह रहते है।

विष्णु पद रुप : मृग चर्मधारी परशुराम जी तथा वाराह जी है जो भगवा वस्त्र धारी है। मानव सदृश्य ही है तथा मुखाकृति वराह जैसी है। किंतु रंग लाल ही है जैसे शेषधड़ का है। असाधारण मुखमंडल मनुष्य के मुखमंडल जैसा ही है। आप दोनों के दो-दो हाथ ही है।

जन लोक :

इस लोक में सदाशिव का वास है। आप ही धर्मराज है। आप क्षरब्रह्म है। आप ही यमराज है। आपके दर्शन होते है। जैसे एक बड़ा प्लास्टिक का बर्तन लो उसमे पानी भरो व चाँदी की पन्नी इसमे डाल दो, अब इसमे हाथ डालकर गोल तीव्रतम गति से घुमाओ व छोड़ दो। थोड़ी देर बाद वह पन्नी मध्य में घुमेगी। ऐसे ही यह द्वार खुलता है, किंतु अंदर जाने की आज्ञा नहीं है। यह द्वार गले में है तथा आपका मुंह पश्चिम में हो तभी यह द्वार की साधना करते समय यह खुलता है। यहाँ सदाशिव का दिव्य मुखमंडल भारत भूमि में बलरामजी का फोटो है वैसे ही है। आपके पावों से श्वेत ऊर्जा मुख मंडल तक निरंतर बह रही है। जैसे किसी जुलाहे ने कोई बारीक धागे कपड़े बुनने के लिए लंबी छोर पर

सघन रुप से बांध दिए हो। आप चूंकि पश्चिम दिशा में मुंह करके खड़े है, इसलिए हवा उत्तर से दक्षिण की ओर बह रही है, जो हल्की बह रही है। इससे यह उठती हुई ऊर्जा उत्तर से दक्षिण की ओर बह रही है। इससे आपका संपूर्ण शरीर दिख जाता है। आप पूर्ण नग्न व पूर्ण गंजे बालविहिन है। आपके दर्शनों को मैंने बड़े आराम से किए। आपने दक्षिण तरफ मुंह किया व दर्शन दिये आपका लोक अत्यंत सुंदर है व आपके लोक में प्रकाशित पृथ्वी ही है। अर्थात् आप जहां खड़े है, वहीं प्रकाशित भूमि है। यह दिव्य श्वेत प्रकाश उत्पन्न करती है तथा जैसे श्वेत अधपके अनार के दाने या अधपके अनार को ऐसे कांटा जाए कि दाने बाहर नहीं बिखरे हो ऐसी उपमा दी जा सकती है, किंतु यह दाने हीरे जैसे है व छोटे है, इसी से ये प्रकाशित है।

इस लोक की साधना से स्वर भी खुलते है। जिससे अत्यंत मधुर आवाज में आप गा सकते है या तो कहे कि इस लोक की आराधना करने के लिए गानों का सहारा भजनों का सहारा भी लिया जा सकता है।

भक्तों का निवास :

आपके बांई ओर दक्षिण में भक्तों का निवास स्थान है। जहां कुछ भक्त भक्ति मुद्रा में है व श्वेत वस्त्र पहने हुए है।

तप लोक/ ईशान लोक :

दोनों नेत्रों के मध्य का स्थान है, यह लोक जब खुलता है तो सामने अत्यंत सुंदर मन को मोहने वाला विशाल पृथ्वी से लेकर आसमान तक स्वर्ण चक्र दिखाई पड़ता है। जो स्वर्ण प्रकाश उत्पन्न करता है। यह चक्र के उपरी छोर पर तीरों के तथा मध्य में नीचली छोर पर एक-दूसरे से जुड़े होते है। यह चक्र धीरे-धीरे घड़ी की पल की सुई की (सेकंड कांटे की) तरह घुमता रहता है तथा इसके पीछे एक स्वर्ण चक्र ओर रहता है जो उसके विपरीत दिशा में धीरे-धीरे घुमता रहता है, इसी चक्र को विष्णु चक्र माना गया है। यह चक्र (सूर्य) आत्मा व सुष्मुन्ना नाड़ी के मिलने से बनता है।

इसी लोक के खुलने पर उपरोक्तानुसार चक्र प्रथमतः दिखता है, किंतु

कर्म :

1. कर्म ऐसे हो कि यज्ञ बन जाए।
2. आलस्य व प्रमाद को त्याग देवे।
3. कर्म स्वार्थ सिद्धी के लिए नही किए जाएँ।
4. प्रतिक्षण ईश्वर से प्रीति होए कर्म के दौरान ऐसा अहसास करना चाहिए। कर्म शरीर द्वारा की जाने वाली भगवत प्रार्थना हो।

ज्ञान :

1. ज्ञान का मतलब जिज्ञासाओं का अंत होना है।
2. ज्ञान का मतलब एकाकी रमण करने वाला होगा।
3. ज्ञान का मतलब बुद्धि का खत्म होना ही है।
4. एकाकी का अर्थ ही यहाँ प्रभु में रम गए।
5. ब्रह्मचारी का भी यही अर्थ है, ब्रह्म में रम गए , न की कुंआरा पन रहना।

भक्ति :

1. चौबीसों घंटे यह शरीर प्रभु में रम गया, उसका दिवाना हो गया।
2. शोषण का अंत ही भक्ति का द्वार खोलता है। सौदों में उलझना नहीं तथा प्रेम में देने की बात सुझती है।
3. शरीर का तार-तार होना वीणा की तरह बजना यही भक्ति है। स्वलोक की साधना से पाँच कोष -

कोष : ये स्व लोक में विद्यमान रहते है व पाँच प्रकाश के होते है।

अन्नमय कोष :

भोजन स्वास्थ्य के लिए किया जाए। नियमित व्यायाम किया जाए।

प्राणमय कोष :

प्राणमय कोष का जागृत होना ही भक्ति योग है। यहाँ शरीर तार-तार हो जाता है।

मनोभय कोष :

ध्यान से मन शांत होता है।

ार शरीर :

यह मह लोक तक सीमित है । यहाँ व्यक्ति को सभी राममय/शिवमय
ाने लगता है , प्रकृति का कण–कण शिवमय लगने लगता है । व्यक्ति व्यक्ति
ामय लगता है ।

क्ष शरीर :

इसका वर्णन किया जा चुका है । (देखे मोक्ष लोक)

ा शरीर :

विष्णु पद प्राप्त व्यक्ति पृथ्वी पर हंस रुप में घुमते है (देखे इसी पुस्तक में
त्माओं का व परशुराम व वराह का उल्लेख)

खी शरीर :

यह शरीर इंद्र लोक, महा स्वर्ग में रहता है । यहाँ परम हंस देवात्मा/
्यात्मा सशरीर रुप में रहा जा सकता है । यहाँ अस्थाई निवास है । इसका उदाहरण
ाणों में ययाति एवं विश्वामित्र की तपस्याओं से लगाया जा सकता है ।

ती शरीर :

ः शरीर का वर्णन इसी पुस्तक में परम अक्षर ब्रह्म लोक में किया जा चुका है ।

नम्र शरीर: पूर्ण ब्रह्म लोक हिरण्यमय प्रकाश के पूर्व सुषुम्ना नाड़ी एवं आत्मा का
लन होने से विनम्र शरीर बनता है । इसके पश्चात ही हिरण्य मय स्वरुप पूर्ण प्रभु
दर्शन होते है । (देखे विराट स्वरुप पद के पश्चात)

ष्टीकरण : वस्तुतः आत्मा अपना स्वरुप जैसा था वैसा ही बना लेती है , जैसे
पने यहाँ कपड़े पहने , रहन–सहन किया वैसा ही शरीर बना लेती है, जिसमें न तो
ः होता है , ना हड्डियाँ होती है, ना ही मज्जा होती है, किन्तु शरीर जैसे उठा एवं
ापिस आत्मा बन गई , ऐसी परिस्थितियाँ बनती है ।

उत्तर दिशा में इसी लोक में विशाल सुरंग है, यहाँ विशाल अर्द्ध गोल पर्वत है व इसी पर्वत के पीछे निरंतर आग जलती रहती है । यही से क्षर ब्रह्म लोकों की उत्पत्ति व विनाश यही पर होता है, यह विशाल श्याह गृह है जो अपने में हजारों पृथ्वीयों सूर्यों को आसानी से समा सकता है । यहीं से अन्य लोकों में जाने के रास्ते है, किंतु गति धीमी हो जाती है ।

सहस्त्र किरणों वाला सूर्य कोई व्यक्ति सहस्त्र हाथ इसी प्रकार रख सकता है (क्षर ब्रह्म)
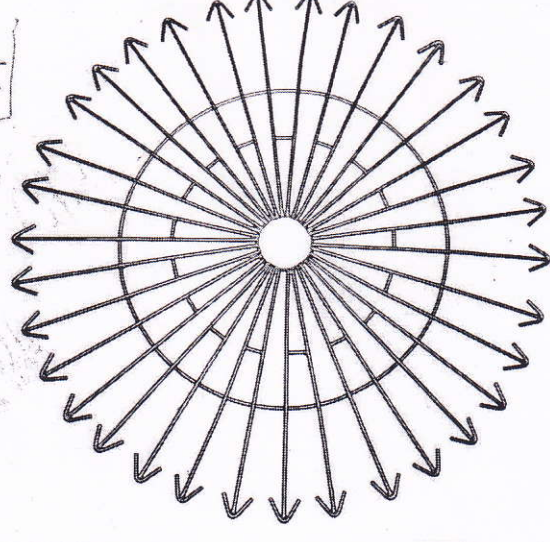
शिव लोक :

क्षर ब्रह्म रुप में शिवजी बैठे है । उक्त द्वार खुलते वक्त आपके यहाँ आसानी से प्रवेश किया जा सकता है (देखे इसी पुस्तक में) शिव पद में प्राप्त द्वितीया के चंद्रमा से ही द्वार खुलता है व आपके दर्शन होते है। प्रथम बार में मेरे से पूर्ण दर्शन नहीं हुए तो कोई साथी पुनः लेके गए व दूसरी बार में दर्शन किए तथा पूर्ण रुप से किसी ने कंधे पर हाथ रखकर कहा कि – इधर भी देखो।

आप विशाल कुर्सी नुमा अत्यंत काली पहाड़ी पर विराजमान है जो लगभग 8 से 10 फीट उंची है व भक्ति कर रहे है। आपका मुखमंडल सुंदर है। आपके मस्तिष्क पर घुंघराले काले केश है, जो विस्तृत फैले है। व दाढ़ी के बाल विरल व सफेद है। जिनमें मैं जहाँ खड़ा था वहाँ से पुण्यतोया मंदाकिनी नदी 10 फीट उंचाई पर आपके मस्तिष्क पर अत्यंत धीमी गति से लकीरों में बह रही है जैसा उदाहरण नीचे दिया गया है। जो उपर की ओर जाती है व आपकी जटाओं को भीगोती हुई आपके शरीर को भीगों रही है। आपका मुंह पूर्व तरफ है इसलिए द्वार पश्चिम तरफ से खुलता है। यह जल अत्यंत धीमी गति से बह रहा है व ऊपर उठ रहा है। उदाहरण के लिए जैसे दो व्यक्ति एक पारदर्शी महीन श्वेत वस्त्र को पकड़े व एक व्यक्ति नीचे पकड़े यह त्रिभुज नुमा वस्त्र हो अब एक व्यक्ति सुई को ले व धीरे–धीरे उस सुई को एक व्यक्ति के पकड़े छोर से ऊपर की ओर ले जाए तो जो लकीर ऊपर दिखेगी, ऐसी ही लकीरों में यह जल बह रहा है तथा 5 सेमी चौड़ाई बाद पुनः ऐसी लकीर है, ऐसे 10 या 15 लकीरों में जल बह रहा है व मध्य के स्थान में भी जल बह रहा है (दो लकीरों के बीच में) यहाँ हवा हल्की दक्षिण से उत्तर की ओर बह रही है, जिससे यह जल बूंदों के रुप में ठिठोली करता प्रतीत होता है। आप श्वेत वस्त्र धारण किए है जो अत्यंत सुंदर है व मलमल जैसा प्रतीत होता है। स्पष्ट है कि यह ऊँचाई पाँच से 7 फीट है।

1. पृथ्वी पर यह शरीर दो भागों में रहता है। प्रथम भाग नीचे लटका होता है, जो चार इंच के लगभग यह नाड़ियां पीले रंग के आकार की होती है व गुच्छे रुप में तथा उपरी भाग थोड़ा मोटाई के लिए होता है व बोलता भी है। बोलते समय नीचे थी। नाड़ी ऊपर की मोटाई से मिलती रहती है। आवाज स्पष्ट सुनी जा सकती है।
2. **पितृ लोक में :**
   यहाँ का वर्णन पूर्व में किया जा चुका है (देखे स्वलोक)
3. **मोक्ष शरीर :**
   इसका वर्णन इसी पुस्तक में मोक्ष पूर्ण मोक्ष रुप में किया गया

जागृत शरीर :

यह शरीर गुरु कृपा से ही जागृत किया जा सकता है। बिना गुरु किए कोई भी व्यक्ति इसे नही जगाए उसके पुष्प कई लोग भुगत रहे है स्कूल शरीर के नीचे के भाग में जहां रीढ़ की हड्डी होती है व पृथ्वी पर बैठने के थोड़ी उपर होती है (देखिए भू लोक) यहाँ हल्का धुंआ ध्यान योग से उठता है। जब यह शरीर जागृत होता है तो दूर कोई शुभ चिंतक/परिचित इत्यादि के कष्टों का भली भांति घर सोए बैठे उठे ज्ञान हो जाता है।

चेतन शरीर :

यह शरीर मनुष्य के आगे–आगे चलता है। यह पथ प्रदर्शक रहता है, किंतु अस्थाई है।

तार–तार शरीर :

यह शरीर स्वलोक में होता है तथा इससे ऐसा लगता है कि सम्पूर्ण शरीर में विणा के तार जैसे अलग–अलग बजते है वैसे ही यह शरीर हो जाता है, किंतु एक बार भय प्रकट हुआ कि यह शरीर मेरे हाथ से फिसल गया।

इन्ही प्रभु के द्वारा पूर्ण ब्रह्म के द्वारा अपने प्रकाश को चार भागों में विभक्त किया गया है, जिसमें प्रथम भाग चांदी के समान था। जो पूर्ण ब्रह्मांड को प्रकाशित करता था। किंतु बाद में आपने अपने प्रकाश को आधा प्रकाश स्वर्ण प्रकाश में परिवर्तित किया, पुनः आधा प्रकाश तीव्र मयूर पंख में प्रकाशित हरे प्रकाश में परिवर्तित किया व कम करके परम अक्षर ब्रह्म के रुप में सतलोक में प्रतिष्ठापित हुए, जहाँ आपका प्रकाश हल्का नीला एवं पूर्ण श्वेत दिखता है। जिससे संपूर्ण परम अक्षर ब्रह्म लोक प्रकाशित हो रहा है, जो 75 प्रतिशत भाग में है। शेष 25 प्रतिशत भाग क्षर ब्रह्म एवं अक्षर ब्रह्म को दिये है व क्षर व अक्षर ब्रह्म की उत्पत्ति नाद से की गई है। स्पष्टीकरण : यह श्वेत नाड़ी सुष्मुन्ना नाड़ी नहीं है, यह नाड़ी पूर्ण ब्रह्म का प्रथम प्रकाश ही है। इसके बाद जो शेष रहता है उसे ब्रहमरन्द्र कहा गया है। इस नाड़ी में जैसे छोटे–छोटे अनेक रोम होते है इसी में रमण करने को ब्रह्मचर्य अर्थात् ब्रह्म में रमण करना कहा गया है।

शरीर :

स्थूल शरीर :

जो आपका मेरा सभी को दिखाई देने वाला शरीर कर्मेन्द्रियों/ज्ञानेन्द्रियों तथा रक्त मज्जा हड्डी त्वचा केश नाखून अंगुलियां इत्यादि। यह शरीर मरने के बाद भी रहता है।

सुक्ष्म शरीर :

यह भी स्थूल शरीर की तरह ही रहता है, किंतु असाधारण आंखें प्राप्त व्यक्ति इसे देख सकते है। यह शरीर जीने वाला का भी रहता है व मरने के पश्चात भी रहता है। मेरे इसी शरीर को पदों से विभूषित किया गया व इसी शरीर से सबकुछ देखा गया। मरने के बाद मे भी शरीर स्थूल शरीर जैसा ही रहता है।

कारण शरीर :

यह शरीर ही वास्तव में आत्मा है। इसका नाश नहीं होता यह सुक्ष्म कण से लेकर अलग अलग स्थलों पर अलग अलग रंगों में रहता है।

आपके दायी ओर सुर्ख लोहे जैसा अर्द्ध चंद्रमा है जो मस्तिष्क से 2 फीट की दूरी पर है, जिससे सुंदर मुखाकृति और अधिक सुंदर प्रतीत होती है। यह चंद्रमा द्वितीया के चंद्रमा की तरह प्रतीत होता है (द्वितीया शुक्ल पक्ष की) यहाँ केसरिया रंग का सूर्य है (जैसे– हमारी पृथ्वी व चंद्रमा की ऊँचाई है, के बराबर दूरी पर है) व यहाँ प्रकाश उत्पन्न कर रहा है। इस सूर्य की अनगिनत बारिक लकीरें जो श्वेत है व एक दूसरे से नहीं मिलती है तथा श्वेत प्रकाश उत्पन्न कर रही है। जैसे किसी मकड़ी ने खड़े जाल लगा दिए हो या अनवरत पृथ्वी पर मुसलाधार वर्षा होती है ऐसा प्रतीत होता है। यह सूर्य किनारों पर स्वर्ण तथा मध्य में केसरिया जल रहा है। पृथ्वी का एक छोर से दूसरे छोर तक श्वेत है व हल्की पहाड़ीनुमा है।

दुर्गा लोक :

आपके एक हाथ में त्रिशुल व दूसरा हाथ वरदायी मुद्रा में दिखा। आपसे सिंदुरी आभा प्रकट हो रही है व माता शुद्ध रक्त वस्त्रों में भारतीय मुद्रा में खड़ी है। आपका निवास स्थान नेऋत्य कोण में है व आकाश में स्थित है। आपके मस्तिष्क पर स्वर्ण आभा लिए हल्का छोटा मुकुट है। आपकी सुंदरता देखते ही बनती है।

विष्णु पद लोक :

यहाँ पर शेष नाग 5 फण धारी है। यहाँ पर भक्तों को पदारुढ़ किया जाता है। देखे इसी पुस्तक में विस्तृत विष्णु पद। इस लोक के बाद मार्ग दिखता नहीं है, किंतु परमअक्षर ब्रह्म की कृपा से यह मार्ग खुलता है , यहाँ आत्मा श्वेत स्वरुप में बड़ी रस्सी की तरह दिखती है।
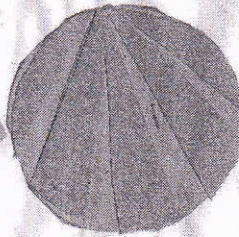
5. कई आत्माएँ सशरीर मेरे ईशारे माना से हंस रुप में चली गई। स्वर्ग में चली गई।
6. मेरे सामने से कई आत्माएँ मोक्ष प्राप्त कर गई (देखे इसी पुस्तक में मोक्ष लोक)

पूर्ण ब्रह्म

पूर्ण ब्रह्म :चार भागों को प्रकाशित है।

प्रथम भाग :

इसका वर्णन हरा तीव्र मयूर पंख के प्रकाश की तरह है देखे प्रकाश स्वरुप कण का उल्लेख देखे इसी पुस्तक में लिखा गया। (पृ.क्र.21)

द्वितीय भाग : द्वितीय भाग परम अक्षर ब्रह्म लोक

तृतीय भाग : तृतीय भाग स्वर्ण प्रकाश देखे पूर्ण ब्रह्म लोक

चतुर्थ भाग : समस्त नाड़ियां जो कारण शरीर के नीचे लटकी है कि इर्द गिर्द रहती है। पूर्ण मोक्ष पश्चात चांदी के प्रकाश सी दिखती है जो छोटा धागा बिखेरा हुआ हो कि तरह दिखती है बाहर आ जाती है तथा तीव्रतम गति से विलिन हो जाती है। यह नाड़ी त्रिकुटी मध्य से बाहर खींचकर निकलती है। जिसका स्पष्ट अनुभव होता है। इस क्षेत्र में जाने की गति पलों में होती है। यह अत्यंत सुंदर व चमत्कारिक लोक है, मैंने इसे पलों में जैसे अलग अलग बिखेरे हुए पत्ते , टहनियां , तना , जड़े एक पल में इकट्ठी हो व वृक्ष बन जाएँ इस प्रकार देखा है।

का होता है , से तुलना की जा सकती है। ऊपर का गोला बड़ा था व नीचे का गोला छोटा था। वहाँ कोई नहीं था, फिर भी ऊपर का बड़ा गोला बार–बार नीचे के गोले को ऊपर खींच रहा था, उनके मध्य एक रस्से की मोटाई के बराबर सफेद कड़ी से जुड़ा था। नीचे गोले का प्रकाश क्षर/अक्षर ब्रह्माण्ड में जलने वाले समस्त सूर्यों की गैसें है जो निरंतर बाहर निकलती रहती है। इन्हीं गैसों का विलय पूर्ण ब्रह्म के प्रकाश में विलिन होता रहता है।

स्पष्टीकरण :

पहले स्पष्टीकरण करना संभव नहीं था। सम्पूर्ण यात्रा के दौरान अब स्पष्टीकरण संभव हो गया है, यह दो भागों में विभक्त सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड है, जिसमें नीचे के भाग में अतल , पाताल, भू, भूवः, स्व मह जन तप इत्यादि लोक जिनका वर्णन पहले किया जा चुका है या यह कि क्षर ब्रह्म व अक्षर ब्रह्म के लोक व द्वितीय बड़े श्वेत गोले को परम अक्षर ब्रह्म का लोक है।

3. वह स्वर्ण कण मेरे हाथ के अंगुठे में चिपका था, वह भी सुई के नोंक पर आए इतना था, वह तीव्र प्रकाश उत्पन्न कर रहा था।

स्पष्टीकरण :

पहले स्पष्टीकरण करना कठिन था। सम्पूर्ण यात्रा के पश्चात् पूर्ण ब्रह्म लोक में यही प्रकाश है।

4. वह वायुयान छः फीट ऊँचाई लिए था, वह पीतल में काला धुंआ स्थापित हो जाए , ऐसा दिखता था वह 4 फीट वृत्ताकार था। वह मेरे सामने से आराम से जा रहा था।

स्पष्टीकरण :

स्पष्ट है कि पृथ्वी के अलावा भी अन्य लोकों पर जीवन है, जो काल ब्रह्म के लोकों के है ।

मोक्ष लोक :

विष्णु पद प्राप्त व्यक्ति इस लोक को आसानी से देखते है। यह स्वर्ण व गुलाबी रंग लिए लोक है यहाँ एक बिंदु से उक्त प्रकाश पट्टिकाओं में जो तिकोनी है दिखता है। यहाँ पर अर्द्ध विकसित डंडी सहित टूटे कमल की तरह आत्माएँ मोक्ष प्राप्त करती है । ये आत्माएँ पृथ्वी से ऐसी उड़ती है जैसे जंगल में कोई आहट पाकर तीतर पक्षी उड़ते है।

भयंकर काल ब्रह्म लोक का अंतिम क्षेत्र :यहाँ लगभग 8 से 10 फीट उंचा विशाला चौड़ाई लिए हुए गैसों का पिरामिड है, जो 4 अलग अलग रंगों की गैसों से ज्वालामुखी जैसा धधक रहा है। इससे यहाँ पूर्ण विशाल मैदानी क्षेत्र में श्वेत प्रकाश उत्पन्न हो रहा है। इस मैदान में कोई भी नहीं है। किंतु परछाई रुपी भयंकर काल क्षर ब्रह्म के रुप मे दर्शन होते है। आपके दांत ऊपर के कीले जैसे जो चार दांतों को छोड़ दे तो दोनों ओर दिखते है। विशाल व भयावह दिखते है। आपकी ऊँचाई 6 1/2 फीट ऊँची है व काले रंग में कपड़े पहने व श्याह काला रंग है। क्षर ब्रह्म का लोक यहीं तक सीमित है। यही वह क्षेत्र है, जहां देव गुरु बृहस्पति ऊँचे आसन पर बैठकर सभाएँ लेते रहते है (देखे इसी पुस्तक में) इससे स्पष्ट हो गया कि नीला रंग यही तक सीमित है व सभी प्रकार के ग्रह ही विष्णुपद (नौ ग्रह) स्वरुप है। यहाँ के बाद रंगों में परिवर्तन होता है। विज्ञान को जानने वाले लोग इसी क्षेत्र को तारा सुपर नोवा समझ रहे है , किंतु यह सत्य नहीं है। क्षर ब्रह्म (शिव स्वरुप) उदारतापूर्वक यही पर विष्णु एवं लक्ष्मी स्वरुप आत्मा को(सशरीर) अपने मस्तिष्क से उठने वाले प्रकाश पर खड़ा करते है। इसके पश्चात ही व्यक्ति महास्वर्ग या परमअक्षर ब्रह्म लोक, पूर्ण ब्रह्म लोक, विष्णु लक्ष्मी लोक में प्रवेश करते है।इसीलिए उन्हे मुकुंद प्रियम कहा गया है।

राम लोक या बैकुण्ठ धाम लोक या प्रथम लोक: यहाँ पर चाँदीयुक्त प्रकाश चहुंओर फैला हुआ है। जैसे घुमड–घुमड़ कर प्रकाश आ रहा हो। यह बैकुण्ठ लोक ही है , यहाँ पर विष्णु शेष सैय्या पर सोए हुए है एवं लक्ष्मी पैरों के पास बैठी हुई है। यहीं पर विष्णु लक्ष्मी पद युक्त आत्माएँ रहती है। आपका स्वरुप श्याम है तथा आपके शरीर से ऐसे प्रकाश प्रस्फूटित हो रहा है जैसे सावन का श्वेत पानी बनाकर बच्चें बुलबुले उड़ाते है। यह श्वेत चांदी का प्रकाश आपके शरीर पर स्थायी रुप से छाया हुआ है जो आपके शोभा को बढ़ा रहा है। आप टकटकी बांधे दिख रहे है। यही प्रकाश अभय पद विष्णु स्वरुप पद में बिछोने जैसा दिया जाता है तथा यही पूर्ण ब्रह्म का प्रथम प्रकाश है

(देखे विष्णु पद रुप एवं पूर्ण ब्रह्म प्रकाश) यही पर हजारों क़ी संख्या में कड़ियों सहित झूले बंधे हुए है किंतु यह नहीं पता चलता की इन्हे किस सहारे पर बांधा गया है। आप पूर्ण रुप से नग्न है।

परम अक्षर ब्रह्म का दूसरा लोक : यहाँ पर ऐसे लगता है जैसे नीर कंचन पानी भरा हुआ हो व आर–पार दिख रहा हो पर वास्तव में यहाँ पानी नहीं है। वहाँ यह नील प्रकाश आपके प्रकाश से प्रकाशित है तथा आप वहाँ विराजमान है। इसी लोक में ऐसा लगता है जैसे छोटे छोटे पौधे के बगीचे लगे हुए है एवं शुष्क जमींन है, जिनमें कोई माली भी नहीं है जो उनको सिंचाई करता हो एवं पुष्प इत्यादि खिलते है। आप यहाँ पर पूर्ण नग्न है तथा आपको माधव नाम से जाना जाए एवं आप शंख चक्र गधा पदम युक्त श्वेत स्वरुप है।

<u>महा स्वर्गलोक</u> : इस क्षेत्र के खुलते ही आवाज आहा निकलती है

यह लोक अत्यंत सुंदर है। यहाँ पर अत्यंत हीमाच्छादित जैसी विशाल पृथ्वी है। यहाँ पर श्वेत पुष्प खिलते है। यहाँ पर सुंदर मंदिर अद्भुत मणी पत्थरों से निर्मित है,जिसमें नीले पत्थरों का ज्यादा उपयोग किया गया है शायद इनको ही देखकर भारत में पत्थरों के मंदिरों का निर्माण किया गया है व बावड़ियाँ इत्यादि है तथा यह पश्चिम में खुलती है। यहाँ यह जमींन विशाल है, किंतु सूर्य निकट है यह सूर्य चाँदी या हीरे से भी अत्यंत सुंदर है व प्रकाश फैला रहा है। सूर्य विशाल तो है पर पृथ्वी से छोटा है। क्योंकि उसकी पृथ्वी से अधिक दूरी नहीं है। जैसे इस पृथ्वी से चंद्रमा की दूरी है। उतनी ही दूरी इस लोक में पृथ्वी व सूर्य की दूरी है, किंतु इसका आकार चंद्रमा के आकार से तीन गुना बड़ा है। यहाँ पर अदृश्य आंख से भी इसके प्रकाश को देखना कठिन हो रहा था। प्रकाश में किरणें नहीं है। यहाँ पर इंद्रादि लोग देव निवास करते है। इस पृथ्वी से उपर अनन्त आकाश नीला रंग लिए है तथा अनंत आकाश दिखाई देता है जैसे पृथ्वी लोक से आकाश देखते है, वैसा ही। साथ ही बहुत सारे ग्रह भी दिखते है, जैसे पृथ्वी से तारे देखते है, वैसे ही इन ग्रहों को आसानी से देखा जा सकता है। निश्चित रुप से इन ग्रहों पर भी अन्यान्य अक्षर ब्रह्म के लोक निश्चित है। यहाँ हीरे जैसी सुंदर आत्माओं का स्वरुप है। यहाँ की पृथ्वी श्वेत है। यहाँ से परम अक्षर ब्रह्म लोक (सतलोक) की ओर जाने वाली सुरंग है। (देखे ब्रह्मांड का चित्र)

अक्षर ब्रह्म लोक में भी विशाल काला पर्वत है, जहाँ पर इस लोक के ग्रहों का विनाश होता है तथा प्रकाश पहले सूर्ख किंतु बाद में दुधिया उत्पन्न होता है। जैसे विशाल दूध के सागर में भारी पर्वत फेंक दिया जाए तो दूध ऊपर उछलता है, ऐसा प्रकाश नष्ट हो रहे ग्रहों का दिखता है। यहाँ से प्रकाश की लपटें नीचे आती है। इससे

हो जाती है एवं दीपक की लो की तरह जलने लगती है एवं धीरे–धीरे पूर्ण प्रभु के प्रकाश में विलिन हो जाती है।

प्राण : वायु एवं रक्त का स्पंदन ही प्राण है। इसका स्पंदन खत्म होते ही मृत्यु प्राप्त होती है।

<u>तार–तार होना</u> : मंत्रोच्चार से स्व लोक से ही शरीर की नाड़ियाँ अलग–अलग स्पंदन करती है, जैसे वीणा के स्वर अलग–अलग बज रहे हो।

<u>कवच</u>: शरीर में मस्तिष्क के पिछले हिस्से में प्रत्येक लोकों में अलग–अलग कवच बनते है, इनसे ऐसा लगता है कि शरीर के प्रत्येक भाग अलग अलग हो यही कवच है। इन्ही कवचों से जैसे फोटो व्यक्ति की लेकर सफाई करवाकर देख सकते है। वैसे ही यह कवच शरीर के अंदर कार्य करते है।

<u>ब्रह्मरन्द्र</u> :इस नाड़ी में जैसे छोटे–छोटे अनेक रोम होते है इसी में रमण करने को ब्रह्मचर्य अर्थात् ब्रह्म में रमण करना कहा गया है।

<u>क्यों</u> : उन अदभूत, परम अलौकिक, अविस्मरणीय पल, सत्य, विलक्षण, बैजोड़, वायु के स्पर्श से भी हल्का जिसकी कल्पना मात्र से रोमावलीया पुलकित हो जाती है। आज भी पुलकित हो उठती है व हृदय की गहराई स्मरण मात्र से अनंत गुना हो जाती है तथा जिसे कोई उपमा प्रदान नहीं की जा सकती है, जो रंग हम देखते रहे है। उन रंगों से भी भिन्न रंगों का प्रतिपादन पृथ्वी के पदार्थों से नहीं किया जा सकता वह निम्नानुसार है –

1. वह अदभूत हराकण था जो सुई की नोंक के उपर टीक सकता है अत्यंत तीव्रतम गति से मेरे संपूर्ण शरीर को लिपट गया जैसे सर्प लिपटता है। जो हवा के भार इत्यादि से भी हल्का था। इसके प्रकाश की तुलना नहीं की जा सकती, किंतु मोर पंख में अत्यन्त चमकीला व हरा प्रकाश है, उससे मेल खाता था।

<u>स्पष्टीकरण</u> : यहाँ से यात्रा का प्रारंभ था। यह प्रकाश सम्पूर्ण यात्रा के पश्चात में विवरण दे रहा हूं (तब संभव नहीं था) किंतु अब संभव हो गया, यह पूर्ण ब्रह्म का प्रकाश है (देखे इसी लेख में अंतिम छोर पर)

2. वे दो गोले थे एक सफेद व एक हरा गहरा जो मोर पंख का हरा चमकीला रंग

तीसरी आंख :– दोनों आंखों के मध्य के भाग से थोड़ी 1 इंच उंचाई पर यह आंख है, जो ध्यान योग से खुलती है।

त्रिकुटी स्थान :–

तीनों नाड़ियों ईडा, पिंगला व सुषुम्ना नाड़ियों के मिलने का स्थान है जो तीसरी आंख से मिलती है। इसलिए इसे त्रिकुटी स्थान नाम दिया गया है।

ईसान या शिव पर दहकते हुए अंगारे शरीर में हृदय स्थान पर बनते है। जिनकी संख्या सैकड़ों में होती है। रोमावलियों से पिलीधान की तरह प्रकाश प्रस्फुटित होता है।

मस्तिष्क के पीछे अर्दचंद्र जो खड़ा हो सुर्ख गर्म लोहे की तरह दिखता है, जो मस्तिष्क पर सुई की चुबन होती है, उससे असंख्य सुईयाँ चुबती हुई महसूस हाती है। मुडो की माला पहनाई जाती है, यह शिव पद है। (देखे विस्तृत पद इसी पुस्तक में)

ब्रह्म पद :– दांतों पर अदभूत प्रकाश पंक्ति दोनों ओर दिखती है, इसके निकलते ही ये सभी आत्मा स्वरुप में पेट में रहते है, यही ब्रह्मा के शरीर में प्रलय पर्यन्त में सूक्ष्म रुप में रहती है।यह शाश्वत सत्य है। यहाँ आत्माएं छोटी सूक्ष्म मछलियों के ढ़ेर की तरह पेट में रहती है।

भयानक क्षर ब्रह्म लोक का अंतिम लोक :

यहाँ कारण शरीर का स्वरुप जली हुई रशी की तरह दिखता है, जो राख से ढ़की रहती है। ऐसा प्रतीत होता है। रावण व मंदोदरी ने भी इसको देखा है। इसलिए वे कहते है कि कठिन काल प्रेरित चली आई (देखे सुंदरकांड में) और मंदोदरी भी कहती है कि जो सुर–असुर चरा–चर खाई (देखे सुंदरकांड में)

महास्वर्ग लोक : यहाँ आते–आते आत्मा या कारण शरीर हिरा सदृश्य प्रतीत होता है

परम अक्षर ब्रह्म लोक : यहाँ कारण शरीर कौड़ी जैसा अकार प्रतीत होता है। जैसे – कौडी के चारो ओर स्वर्ण लकीर दिखती है ऐसी ही दो स्वर्ण गोलाकार आकृतियाँ उसको सुन्दर आकार देते है एवं इस कौड़ी को बीच में से फोड़ दिया जाये एवं शक्कर के दानों से भर दिया जाये ऐसा अलग–अलग प्रतीत होता है या इसे एक गार का पत्थर को फोड़ दिया जाएं व इससे जो अंदर का भाग दिखता है इसमे कौड़ी जैसा स्वर्णाकृति बना दी जाएं ऐसा ही सुंदर प्रकाश है।

पूर्ण ब्रह्म लोक :

पूर्ण ब्रह्म लोक तक पहुंचते–पहुंचते यह सूर्ख लोहे (गरम लोहे) की तरह छोटी

स्पष्ट होता है कि क्षेत्र में अग्नि की लपटें नीचे की ओर आते हुए प्रतीत होती है इससे स्पष्ट है कि उंचाई पर अग्नि नहीं है एवं परम अक्षर ब्रह्म लोक स्वयं परम अक्षर ब्रह्म के प्रकाश से प्रकाशित है। यहाँ से सीधे परम अक्षर ब्रह्म लोक जाया जा सकता है।

राजराजेश्वरी लोक : कमला या राजराजेश्वरी माता का लोक स्वयं आपके प्रकाश से प्रकाशित है तथा आपका प्रकाश लाल रंग का है, जिसमें कोई किरण नहीं है एवं सघन है। जहाँ माता राजराजेश्वरी बैठती है तथा आप का लोक अग्नेय कोण में स्थित है।

अक्षर ब्रह्म लोक : आप इस लोक में निवास करते है। वह लोक अंधकारपूर्ण है, किंतु आप उत्तर दिशा में सबसे ऊपर अंतिम छोर के गृह पर निवासरत है तथा आपके गृह में आपकी पीठ से स्वर्ण प्रकाश चक्र रुप में उत्पन्न हो रहा है। आपकी सिर्फ जटाए है। आपकी जटाए श्याह रंग की है तथा जुड़ा बंधा है। केश बाई ओर लटक रहे है इसलिए आपका नाम जटाधराय भी लिया गया है व आपका मुंह दक्षिण दिशा में है। आप भी पूर्ण नग्न है तथा वर्ण श्याम है। बदन इकहरा है तथा आपकी ऊँचाई छः फीट के लगभग है। यहाँ से सुरंग के द्वारा पूर्ण ब्रह्म लोक में जाया जाता है।

परम अक्षर ब्रह्म लोक (सतलोक) :

अक्षर ब्रह्म लोक के पास से ही लगी सुरंग से आपके लोक जाया जाता है (देखिये दो भागों में विभक्त ब्रह्मांड का चित्र व सुरंग)यहाँ आत्मा कवड़ी के समान रहती है व शरीर भी उसी प्रकार सुंदर रहता है। कवड़ी के उपर जैसे दो स्वर्ण पट्टिकाएँ छोटी रहती है। उसी प्रकार से यहाँ आत्मा का स्वरुप बदलता है। यह लोक श्वेत है। आपके यहाँ जाया जा सकता है। किंतु आपके विशाल व बड़े आकार के स्फटिक से निर्मित भवन के बाहर खड़ा रहा जा सकता है। आपके भवन से हल्का नीला व अधिक श्वेत प्रकाश प्रस्फूटित हो रहा है। इसी लोक में संपूर्ण श्वेत प्रकाश यही से फैल रहा है। इस भवन के उपर विशाल व श्वेत छत्र है। जिसकी पृथ्वी के पदार्थों से किसी भी प्रकार से उपमा नहीं दि जा सकती, जो उथला (कम गहराई लिए हुए है) जो श्वेत पदार्थ से निर्मित है। यह आपकी शक्ति से ही टिका है। इसी छत्र पर सुई की नोंक इतनी बारिक स्वर्ण प्रकाश टिमटिमा रहा है जो छत्र की खुबसूरती बढ़ा देता है। यहाँ से नीचे आते समय ऐसा लगता है कि असंख्य श्वेत तारे झिलमिला रहे है। यह असंख्य लोक है। निश्चित रुप से अदभूत दृश्य देखते ही बनता है। परम अक्षर ब्रह्म ही पूर्ण ब्रह्म है। यहाँ पर शांति है। आपका प्रकाश पूरे सतलोक को प्रकाशित करता है एवं प्रकाश श्वेत है ,इसलिए आपको भस्मांगरागाय नाम दिया गया है।

शिवलिंग युक्त आकाश :

दो गोलाकार आकृतियां शिव लिंग जैसी उपर नीचे थोड़ी थोड़ी दूरी पर रखी हुई है तथा मध्य में बारीक काली रेत कण फैली हुई है , इस प्रकार यह दिखती है। जैसे किसी ने सुंदर रांगोली का निर्माण लिंगों से और रेत से किया हो। यही कारण है कि यहां शिवलिंग को पूजा जाता है। यहाँ गुरुत्वाकर्षण शक्ति नहीं होने से व्यक्ति यहाँ से नीचे आता है ऐसा लगता है कि जैसे छतरी को खोलते है तो उपर दबाना पड़ता है। वैसे ही यहाँ स्थिति रहती है।

पूर्ण ब्रह्म लोक :

यह लोक दो भागों में विभक्त है प्रथमतः भाग पीछे खुलता है जहाँ पर व्यक्ति को विराट स्वरुप पद प्राप्त होता है। (देखे इसी पुस्तक में विराट पद)

द्वितीय भाग 90 डिग्री कोण पर खुलता है व यहाँ पर आपका प्रकाश तीव्र आंधी में उड़ते धूल कण हो ऐसा स्वर्ण प्रकाश दिखता है। आपका शरीर श्वेत है , आपकी जटाएं विस्तृत है तथा घुंघराले बाल है। आपका एक हाथ वरद मुद्रा में है। आपके गले में अलौकिक सर्प है।

आपको इसीलिए वासुदेव कहा गया कि आप इस अग्नि से निकले हो आपको जगन्नाथ इसीलिए कहा गया कि आप अंश मात्र से पालन पोषण करते है। (देखे इसी पुस्तक में)आपको इसीलिए देवगुरु बृहस्पति कहा गया है। आप प्रत्यक्ष रुप से गुरुरुप में दिखते है। जैसे हम यहां गुरु बनाते है। उसी गुरु रुप में दिखते है। यही पर आत्मा का इसी पूर्ण प्रकाश में विलय होता है। (देखे इसी पुस्तक में) इस ऊँचाई से सुरंग द्वारा रिक्त आकाश में जाया जाता है। यही पर सुषुम्ना नाड़ी आत्मा से मिलती है तथा अत्यंत विनम्र भाव होते है।आप नाग का हार पहने हुए है। इसलिए आपका नाम नागेन्द्रहाराय दिया गया है।

5.**श्वेत प्रकाश :**

पूर्ण ब्रह्म का प्रथम प्रकाश :श्वेत प्रकाश बायी ओर दिपक की लो की तरह दिखता है। उदा.के लिए–गीता का श्लोक क्र. 17।

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्।

अर्थ – वह परब्रह्म ज्योतियों का भी ज्योति एवं माया से अत्यन्त परे कहा जाता है। वह परमात्मा बोधस्वरुप, जानने के योग्य एवं तत्वज्ञान से प्राप्त करने योग्य है और सबके हृदय विशेष रुप से स्थित है। 17।

6. पूर्ण ब्रह्म का द्वितीय प्रकाश : हृदय स्थान के दाहिनी ओर यह प्रकाश रहता है। जो अत्यन्त महीन धागे की तरह लपेटा रहता है जो दोनों आंखों के मध्य खिंचाता हुआ बाहर निकलता है , जिसका स्पर्श स्पष्ट प्रतीत होता है। 7. उपस्थ तथा गुदा के मध्य से निकलती हुई आत्मा का प्रकाश क्षर व अक्षर ब्रह्म एवं पूर्ण ब्रह्म तक जाता है। जो पूर्ण ब्रह्म के स्वर्ण प्रकाश में विलीन हो जाता है। (हिरण्यमय प्रकाश) यह प्रकाश महास्वर्ग में हीरे की आकृति लेता है तथा परम अक्षर ब्रह्म (सतलोक में) कवड़ी जैसा आकार रहता है।

8. दो अतिरिकत हाथ :दो अतिरिक्त हाथ यहाँ पर रुद्र की कृपा से प्रकट होते है।
स्पष्टीकरण : जो आत्मा का प्रकाश शरीर के अं दर प्रकट होता है एवं बाहर है वही प्रकाश क्षर, अक्षर ब्रह्म के ब्रह्मांड के बाहर प्रकट होता है। इसका उदाहरण मयूर पंख को देखकर अंदाज लगाया जा सकता है या उपमा दी जा सकती है। यह प्रकाश उपस्थ भाग से उंचाई प्राप्त करती आत्मा का है व दूसरे बार डाली गई आत्मा का है। 2. आत्मा जो उपस्थ व गुदा के मध्य से यात्रा आरंभ करती है। उसे पूर्ण ब्रह्म के द्वितीय स्वर्ण प्रकाश में विलीन होता है। इसी स्वर्ण प्रकाश के कारण आपको हिरण्यमय पुरुष कहा गया है।जो हृदय के बाहिनी ओर दोनो आंखों के उपर से बाहर निकलता है (देखे पृ.क्र.6)दूसरी आत्मा का प्रकाश पूर्ण ब्रह्म के प्रथम चांदी के प्रकाश में विलीन होता है। तृतीय आत्मा का प्रकाश जो हृदय की दाहिनी ओर रहती है वह इस क्षेत्र से आपके शरीर को उंचाई पर ले जाते हुए प्रकाश उत्पन्न करते हुए परम अक्षर ब्रह्म क्षेत्र में ले जाती है। यदि मोक्ष नहीं प्राप्त होता है तो ये आत्माएं अशरीर या शरीर रुप में प्रथम स्वर्ग लोक या पृथ्वी पर ही विचरण करती है।

विष्णु : श्रद्धा से विष्णु प्रकट होकर उदर स्थान से जल इत्यादि ग्रहण करते है।
उदाहरण के लिए– पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्तया प्रयच्छति।
तदहं भक्तयुपहतमश्नामि प्रयतात्मनः ॥
अर्थ – जो कोई भक्त मेरे लिये प्रेम से पत्र, पुष्प, फल , जल आदि अर्पण करता है, उस शुद्ध बुद्धि निष्काम प्रेमी भक्त का प्रेमपूर्वक अर्पण किया हुआ वह पत्र पुष्पादि मैं सगुणरुप से प्रकट होकर प्रीतिसहित खाता हूँ।।26)

हृदय स्थान में :

यह छाती व पीठ के अन्दर रीढ़ की हड्डी के सामने का स्थान है।

निला प्रकाश : यहाँ पर नीला प्रकाश आत्मा का उठता दिखता है, यह प्रकाश सम्पूर्ण छाती में धीरे–धीरे उठता है व पूरी छाती को भर देता है।

1. **स्वर्ण मय प्रकाश :**

यह प्रकाश स्वर्ण किरणों के रुप में उठता है जो हृदय से उठता है जो अंतरिक्ष में विलिन होता है।

2. **शंकरजी :**

हृदय के बायी ओर आप विराजमान दिखते है आप के मस्तिष्क से गंगा प्रभावित हो रही है। आप मृगछाल पर बैठे है। त्रिशुल और डमरु आप के दायनी ओर शोभायमान है तथा आप के दो ही हाथ है। नाग का हार पहने हुए है एवं मृगछाल पहने है। शंकरजी बाहर से शुद्ध होते है तथा जल इत्यादि चढ़ाने पर प्रसन्न होते है। जैसे भारत के फोटो या मूतियाँ निर्मित की गई है इसलिए आप को गंगाधर आदि नामों से उपमा दी गई है।

3. **विष्णुजी :–**

हृदय के दायी ओर यहाँ पर विष्णुजी शयन करते दिखते है, किन्तु यहाँ पर शेषनाग नहीं है। किन्तु वास्तव में शंकर व विष्णु नहीं है यह स्वर्ग एवं शिवलोक के प्रतीक मात्र है।

4. **अनहद नाद :**

यहाँ पर अनहद नाद गुंजता है जो अत्यंत शांति होने पर ही सुनाई देता है। अन्य लोगों ने यहाँ पर डमरु, नगाड़े, भैरी इत्यादि के आवाजों के बारे में बताया है, किन्तु यह असत्य है। उक्त वाद्य यंत्रों का सुनाई देना क्षर ब्रह्म की उदारता या वरदान के पश्चात ही संभव है , जिसका वर्णन शिव तांडव स्त्रोत में रावण ने भी किया है।

दो भागों में विभक्त
ब्रह्माण्ड
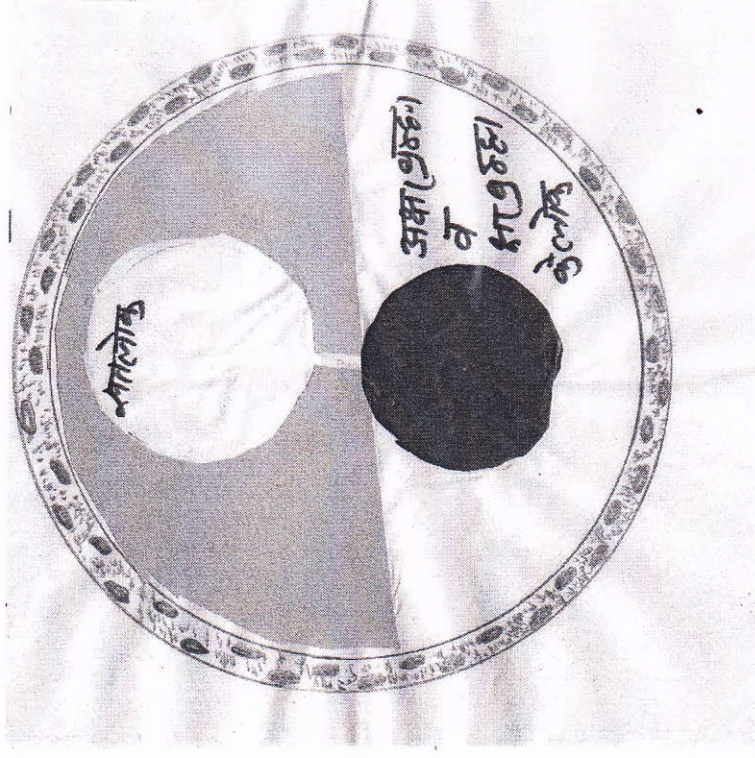
पद:::

शिव पद :

रोमावलियों से धान जैसा प्रकाश प्रस्फुटित होना शरीर के अंदर हजारों छोटे षटकाण्कार रक्त वर्ण का प्रकाश दिखना।

मस्तिष्क के बाई ओर अर्द्ध चंद्र विकसित होना मस्तिष्क पर सुई जैसी चीज गिरने से शरीर के अंदर समस्त स्थानों पर वैसी ही चुभन होना / राख का शरीर पर गिरना/लोगों के सूक्ष्म मुण्डों की माला बनना/मस्तिष्क के दाहिनी ओर द्वितीया के चंद्रमा की तरह सूर्ख लोहे जैसा चंद्रमा बनना/अनेक आत्माओं को मोक्ष देना।

विष्णु पद :

यह छोटा लोक है एवं अंधकारमय है। यहाँ पाँच फण वाले लगभग 8 या 10 फीट उंचे शेष नाग है, जो हिलते भी नहीं है। यहाँ सूक्ष्म चाँदी जैसे प्रकाश के बिछौने पर सूक्ष्म शरीर को खड़ा कर विष्णु पद दिया जाता है तथा स्वर्ण प्रकाश स्वरुप महीन स्वर्ण धोती पहनाई जाती है। आत्मा का स्वर्ण प्रकाश शेष नाग के पीछे होता है तथा शरीर सर्प के काटने से जैसे नीला होता है, वैसे हो जाता है तथा सुगंधहीन श्वेत एवं नीले फूलों की प्रकाश स्वरुप माला पहनाई जाती है। यहाँ जैसे सर्प के काटने से मुंह में श्वेत झाग निकलते है वैसे ही मुंह से श्वेत प्रकाश निकलता है।

यहाँ से आनके बाद पर श्याह लंबादे युक्त अदभूत आकृति दिखती है। यह खतरनाक आकृति है। यह क्षर ब्रह्म का ही रुप है (देखे भयंकर काल ब्रह्म लोक)शायद यह आंखों से उत्पन्न श्याह प्रकाश है। यह प्रकाश की एक जोड़ी (दो आँखें) घुरती नजर आती है। यह कम क्षेत्र में श्याह प्रकाश दिन के उजाले में भी दिखता है। यह

क्या है शरीर के अन्दर

उपस्थ एवं गुदा के मध्य का भाग जहाँ रीढ़ की हड्डी का निचला शीरा होता है। वही से ध्यान योग के द्वारा यह हिस्सा खुलता है, जैसे किसी व्यक्ति के द्वारा अग्नि प्रकट की जाती है व धुंआ प्रथमतः उठता है। वैसे ही यहाँ भी धुंआ उठता है तथा हल्की सी ध्वनि के साथ यहॉ गठान खुलती है। जैसे कभी लकड़ी के जलने से हल्की आवाज आती है , ऐसी स्थिति बनती है। पहले मान्यता थी कि पहले कोई नागीन रहती है पर ऐसा कुछ भी नहीं है। ध्यान योग से देखने पर नागिन दिखती जरुर है , पर यह भ्रम मात्र है , व्यक्ति यदि भयभीत होता हे तो वह ऊंचाई प्राप्त नहीं कर सकता। वास्तव में यहाँ कारण शरीर सुप्त अवस्था में यहाँ रहता है।

यह यहाँ काले चूहे के सदृश्य रहता है। भला यहाँ नागिन का क्या काम जो यहाँ साढ़े तीन हाथ लम्बी सुप्त अवस्था में इस क्षेत्र में पढ़ी रहे तो उसका वजन कितना होगा अंदाज लगाना मुश्किल होगा यह कारण शरीर ही है।

इस स्थान से दो इंच ऊंचाई पर अर्द्ध अग्नि की थाली हो व उसमे छोटे-छोटे दहकते अंगारे रखे हो। ऐसा प्रतीत होता है। यह सूर्य अक्षर ब्रह्मलोक की ऊँचाई से दिखता है। किंतु यह सूर्य वास्तव में हमारे भुव लोक (पृथ्वी लोक) के सूर्य का प्रतीक मात्र है।

उदर स्थान :

उदर स्थान को ही स्व लोक माना गया है। यहाँ दहकती हुई अग्नि दिखती है, जो हमारे ही कारण शरीर की है, जो हमारे उदर स्थान के वहाँ दिखती है। यही पर अन्नमयः प्राणमय, मनोमय व विज्ञानमय कोष विद्यमान है। जिसका विस्तृत विवरण संपूर्ण यात्रा पुस्तक में संक्षिप्त रुप में दर्शाया गया है। आनंदमय कोष की स्थापना होने पर आनन्द प्राप्त होता है , जो हमारे स्वलोक तक सीमित है व अस्थाई है। बाहर तो प्रमाद है।

एक सेकण्ड में सब कुछ खत्म कर देने के लिए उदृत्त तैयार है। किंतु भक्त को ऐसा भय भीत होने की जरुरत नहीं है इसी लिए आपको कालरात्रि या भृकुटी विलास नाम दिए गए है। यहाँ पर रक्त प्रकाश कुछ समय पश्चात् प्रकट होता है। जो सम्पूर्ण शरीर से प्रकट होता है। यही रक्त की शुद्धता का प्रमाण है या यो कहे कि नीला पड़ चुका शरीर वापिस उसी अवस्था में आ जाता है। इसलिए ऐसा होता है। यह पद प्राप्त होते ही षटकोण प्रकाश रुपी गृह मस्तिष्क से बाहर निकलते है। ये षटकोण रुपी प्रकाश ही ग्रह है जो विष्णुपद रुपी है। व भक्त के साथ षडंयत्र करते है किंतु विष्णु पद प्राप्त होते ही ये षडयंत्ररुपी प्रकाश बाहर निकल जाते है। स्पष्ट हे कि यह सभी षड़यंत्रकारी मस्तिष्क में विद्यमान रहते है। यही अभयपद है। तुलसीदासजी इसी पद को दोहे के रुप में लिखते देहू अभयपद नेंहू निबाहू बंदउ राम लखन वैदेही जे तुलसी के परम सनेही।

इसीलिए संतों के बारे में एक भजन प्रसिद्ध हुआ है। जगत में संत परम हितकारी...।

ब्रह्मा पद : दाँतों पर रद पटल पर अदभूत प्रकाश पंक्ति दोनों ओर दिखती है। इसके निकलते ही ये सभी आत्मा स्वरुप में पेट में रहते है। यहीं ब्रह्मा के शरीर में कल्पांत में सूक्ष्मरुप से रहती है। यह शाश्वत सत्य है। यह आत्माएँ छोटी सुक्ष्म मछलि यों के ढेर की तरह पेट में रहती है।

विराट स्वरुप पद :

यह पूर्ण ब्रह्म लोक में दिया जाता है। यहाँ व्यक्ति को जैसे रस्सी को जलती हुई लंबी रख दी जाए तो उसके जलने के बाद राख शेष रह जाती है। ऐसी अवस्था रहती है। अर्थात् व्यक्ति वहाँ वैसे ही जाता है। उसके पीछे शेष नाग जो प्रकाश स्वरुप रहता है तथा रक्त पंखुड़ियों वाला चक्र जो रक्त वर्ण में रहता है। (देख रक्तचक्र) वहाँ स्थित होता है।उसके पीछे आत्मा का प्रकाश पीले स्वरुप में रहता है। गणेश (गणेश इत्यादि विराट स्वरुप पद में भी देखे गये) देखे पूर्ण ब्रह्म लोक/लिखने का सीधा तात्पर्य यह है कि आप जहां गए उस लोक में आपके शरीर में वैसे बदलाव आएंगे।

यह रक्त चक्र ऐ से घुमता है जैसे विशाल पंखुड़ियों वाली पवन चक्क्याँ मंद मंद हवा के झोखे से घुमती हो।

<u>विराट स्वरुप क्षेत्र में असंख्य किरणों वाला रक्त चक्र ए वं उसके पीछे आत्मा एवं सुष्मुन्ना नाड़ी के मिलने से बनता है</u>
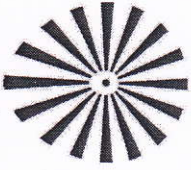
आत्मा :

इसका विस्तृत स्वरुप स्वलोक में बताया है।

आत्मा के स्वरुप